International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 243-245

फतेहपुर शेखावाटी में नवाबी राज्य

डॉ. अवतार कृष्ण शर्मा*

प्रस्तावना

फतेहपुर राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश के सीकर जिले में जयपुर से बीकानेर जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग 52 पर स्थित है। फतेहपुर शेखावाटी का प्रसिद्ध प्राचीन कस्बा है जो चित्रकला के प्रसिद्ध रहा है। राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश में स्थित होने के कारण यह फतेहपुर शेखावाटी के नाम से जाना जाता है। फतेहपुर की स्थापना के सम्बंध में विभिन्न उल्लेख मिलते हैं। माधव वंश प्रकाश नामक पुस्तक में इसकी स्थापना संवत 1578 (1521ई.) में होना लिखा है। वाक्यात कौम कायमखानी के अनुसार फतेहपुर की बुनियाद चेत्र सुदी पंचमी, संवत 1458 मगलवार (19 अप्रेल 1401 ई.) में रखी गयी। कायमखानी वंश के इतिहास में किशनलाल ब्रह्मभट्ट की बही के आधार पर संवत 1503 (1446 ई.) तक फतेहपुर की स्थापना हो जाने का उल्लेख है। श्री झाबरमल शर्मा के अनुसार फतेह खॉ ने सम्वत 1509 (सन् 1451 ई.) में फतेहपुर की नवाबी की नींव डाली।[1]क्याम खां रासों में लिखा है कि बहलोल लोदी की नाराजगी के कारण फतेह खां ने हिसार छोड़कर फतेहपुर बसाया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि फतेहपुर की स्थापना फतेह खां (1445–1452 ई.) ने की। फतेह खां कायमखानी के पिता का नाम ताजखां था। फतेह खां के द्वारा बसाये जानम के कारण इसका नाम फतेहपुर प्रसिद्ध हुआ।

फतेहपुर में रहने के लिए किला बनने तक फतेह खां ने रणेऊ गांव को अपना निवास स्थल बनाया। फतेह खां को शेखावाटी के दक्षिणी.पश्चिमी भाग में कायमखानी सत्ता स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। उसने खेतडी के शिमला के पास स्थित ढोसी के अक्खन खां के पक्ष में मेवातियों से लड़ाई लड़ी और उन्हे परास्त किया। ढोसी का अक्खन खां उसका भाई था। मोहिलवाटी (छापर द्रोणपुर) पर राव जोधा के अधिकार हो जाने पर वहां के मोहिल बैरसल और उसका भाई नरबद सहायता प्राप्त करने के लिए फतेहखां के पास आए थे। इसी कारण राव जोधा ने फतेहपुर पर आक्रमण कर नगर को लूट कर जला दिया। सम्भवतः इसी समय मोहिलों की सहायतार्थ फतेहखां चित्तौड़ गया हुआ था। यह घटना लगभग 1474 ई. के आस पास की है। क्यामखां रासों के अनुसार फतेहखां ने रणथम्भौर के घेरे (1482 ई.) में बहलोल लोदी की सहायता करके उसकी सहानुभूति प्राप्त की थी। इस प्रकार अपनी मृत्यु तक फतेहखां ने शेखावाटी के दक्षिणी पश्चिमी भाग में कायमखानियों को दृढ़ता से स्थापित कर दिया।

फतेह खां की मृत्युपरान्त उसका बड़ा पुत्र जलालखां फतेहपुर का नवाब बना। जलालखां के समय झुन्झुनूं के कायमखानी नवाबों और फतेहपुर के नवाबों में मनमुटाव शुरू हुआ। झुन्झुनूं के नवाब फतेहखां, जो बहलोल लोदी का जमाता था, ने अपने भाई मुबारक और विमाता को झुन्झुनूं की जागीर में कोई हक नहीं दिया। परिणामस्वरूप अन्ततः मुबारक खां ने जलाल खां की श्रण ली। उसकी सहायता से मुबारक खां ने फतेह खां को हराकर झुन्झुनूं पर अधिकार कर लिया।[2] जलालखां को बीकानेर के बीदा और नरहड़ के नवाब

* व्याख्याता, इतिहास, स्वामी विवेकानन्द राजकीय महाविद्यालय, खेतड़ी, झुंझुनूं, राजस्थान।

पठान दिलावर खां के संयुक्त आक्रमण का सामना करना पड़ा। परन्तु जलालखां के पुत्र दिलावर खां के सामने उन्हें असफलता हाथ लगी। नागौर के नवाब के साथ भी इसे संघर्शरत रहना पड़ा। नागौर के भय के कारण जलाल खां को लोहार्गल के पहाड़ों की ओट में रहना पड़ा था। छापोली (उदयपुरवाटी) के भोमियों एवं आमेर के कुछ भाग पर भी इसने आक्रमण किया। जलाल खां ने फतेहपुर के किले में नये भवन बनवाए तथा शहर के दक्षिण में जानवरों के लिए 12 कोस का बीड़ सुरक्षित छुड़वाया।[3] जलालसर नामक गांव इसी का बसाया हुआ माना जाता है।[4]

जलालखां की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र दौलत खां फतेहपुर का नवाब बना। दौलत खां शक्तिशाली नवाब था। झुन्झुनूं की गद्दी के लिए भीखन खां और नुंआ के जमींदार मुहब्बत खां के बीच हुए झगड़े में दौलत खां ने मुहब्बत खां का पक्ष ले कर उसे झुन्झुनूं की नवाबी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस झगड़े में बीकानेर के लूणकरण ने भीखनखां का पक्ष लेकर फतेहपुर पर चढ़ाई की। दौलत खां ने लुणकरण को कई गांव दे कर सुलह करनी पड़ी। लगता है इसके बाद दोनों के बीच सद्भाव बढ़ा। सम्भवतः इसी कारण राव लूणकरण द्वारा 1526 ई. में ढोसी पर किए गए आक्रमण में दौलत खां ने लूणकरण की सहायता की।

दौलत खां का पुत्र नाहर खां दौलत खां के बाद फतेहपुर का नवाब बना। इसने फतेहपुर किले में एक सुन्दर महल का निर्माण करवाया। इसके समय मारवाड़ नरेश मालदेव ने बीकानेर व इसके आस–पास के प्रदेशों पर अधिकार कर फतेहपुर एवं झुन्झुनूं की जागीर सेनापति कुम्पा को दे दी। शेरशाह सूरी के मालदेव पर आक्रमण के समय सम्भवतः इसने शेरशाह की सहायता की थी।

नाहर खां के बाद क्रमशः फदनखां और ताज खां फतेहपुर के नवाब बने। ताजखां के समय अकबर ने फतेहपुर की जागीर गोपाल जी शेखावत को तथा झुन्झुनूं की जागीर माण्डण कुम्पा को दे दी। ताज खां के बाद उसका पुत्र अलफखां फतेहपुर का नवाब बना। अलफखां ने अकबर से फतेहपुर की जागीर पुनः हासिल की। अलफखां बादशाह अकबर की सेवा में कई वर्ष तक रहा। 1600 ई. में मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह के विरूद्ध सलीम के नेतृत्व में भेजी गई शाही सेना में अलफखां और झुन्झुनूं का नवाब शम्सखां द्वितीय भी शामिल थे।[5] क्यामखां रासो के अनुसार शम्सखां द्वितीय को अलफखां अकबर के दरबार में ले गया था। अलफखां अकबर के बाद बादशाह बने जहांगीर के समय भी मुग़ल सेना में महत्वपूर्ण सेवाएं देकर बादशाह की कृपा प्राप्त करता रहा। परिणामस्वरूप जहांगीर ने अलफखां का मनसब बढ़ाकर 1500 जात एवं 1000 सवार कर दिया तथा उदयपुर, बड़वा और नरहड़ की जागीर भी अलफखां को प्रदान की।[6] अलफखां को दो बार कांगड़ा का दुर्गाध्यक्ष बनाया गया। अन्ततः अलफखां कांगड़ा के राजा जगतसिंह के विरूद्ध लड़ते हुए 1626 ई. (वि.सं. 1683) में मारा गया। अलफखां के दौलतखां, न्यामत खां, सरीफखां, जरीफखां, फकीरखां नामक 5 पुत्र हुए। इनमें से दौलत खां फतेहपुर का नवाब बना। अलफखां का एक अन्य पुत्र न्यामतखां बड़ा प्रसिद्ध विद्वान हुआ। उसने 'कवि जान' के उप नाम से क्यामखां रासो सहित लगभग 76 ग्रन्थों की रचना की। दौलत खां अपने पिता की तरह 14 वर्षों तक कांगड़ा का किलेदार रहा। इसके समय इसके पुत्रों ताहिर खां एवं सरदार खां को भी बादषाह से जागीर मिली। दौलत खां अपने पुत्र ताहिर खां सहित मुराद के 1647 ई. के बल्ख अभियान में शामिल हुआ था। औरंगजेब के कंधार अभियान (1652 ई.) में भी दौलत खां साथ था। यहीं पर दौलत खां की 1753 ई. में मृत्यु हुई।

दौलत खां के एक पुत्र ताहिर खां की बल्ख अभियान के समय मृत्यु हो गई थी। अतः ताहिर खां का बड़ पुत्र सरदार खां फतेहपुर का नवाब बना। यही नवाब अलफ खां सानी (दूसरा) कहलाता था। औरंगजेब ने इसे 1500 जात और 700 सवार कर मनसब प्रदान किया।[7]

सरदार खां की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई दीनदार खां नवाब बना। दीनदार खां सरदार खां के समय ही शाही मनसबदार बन गया था। दीनदार खां की मृत्यु के बाद उसका पौत्र सरदार खां द्वितीय फतेहपुर का नवाब बना। सरदार खां मुग़ल दरबार में बादशाह निर्माता के रूप में प्रसिद्ध सैयद बन्धुओं का कृपा पात्र था। सैयद हुसैन अली का निकाह सरदार खां की बहन से हुआ था। इस सम्बंध के चलते उसे सांभर कोटकासिम

एवं झुन्झुनूं की फौज़दारी मिली। हुसैन बन्धुओं की कृपा के कारण उसने फाजिलखां से झुन्झुनूं छीन लिया था। यह नवाब रूपवती तेलिन के साथ सम्बन्ध रखने केकारण कुख्यात हुआ। इस तेलिन के पुत्र महबूब को फतेहपुर का नवाब बनाने की उसके प्रयासों के कारण कायमखानी सरदार नाराज हो गये। अतः उन्होंने शिवसिंह शेखावत के साथ मिलकर सरदार खां को हटाने का प्रयास किया। अन्त में उन्होंने फाजिल खां को हटा कर उसके स्थान पर कायमखां को फतेहपुर का नवाब बनाया।

इस घटना के बाद नवाब के ऊपर शिवसिंह का प्रभाव बहुत बढ़ गया। उसकी मदद से नवाब बने कामयाब खां शिवसिंह को प्रसन्न रखने में असफल रहा। अतः शिवसिंह ने झुंन्झुनूं के शार्दुल सिंह के साथ मिलकर कामयाब खां को पराजित कर फतेहपुर से कामखानी नवाबी का अंत कर वहां शेखावत शासन की स्थापना करने में सफलता प्राप्त की और इस प्रकार फतेहपुर से नवाबी शासन का अन्त हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. झाबरमल्ल शर्मा मरू भारती वर्ष 1 अंक 3 पृष्ठ 6.
2. कायमखां रासो छंद 474–475.
3. झाबरमल्ल शर्मा, मरूभारती, वर्ष 1 अंक 3, पृष्ठ 8.
4. झूथाराम, माधव वंष प्रकाश, पृश्ठ 125.
5. कायम खां रासो, छंद 685.
6. कायम खां रासो, छंद 783,786, जहांगीर नामा (अनु, ब्रजरत्नदास), पृष्ठ 696.
7. रतन लाल मिश्र, शेखावाटी का नवीन इतिहास।

❖◆❖